तेवरी-पक्ष

[जन-जागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी]

11

Scanned by CamScanner

तेवरी-पक्ष

(जन-जागरण को विचार प्रधान त्रैमासिकी)

वर्ष–छः अंक–दो अप्रैल मई जून–१९८९

संरक्षक–श्री रामचरन गुप्ता

सम्पादक–रमेशराज

[redacted]

मूल्य–एक प्रति, तीन रुपया

वार्षिक–दस रुपया

सम्पादन/संचालन-अवैतनिक

पत्रिका परिवार

सर्व श्री श्याम बेबस

दर्शन बेजार

कुमार अशोक

गजेन्द्र बेबस

वीरेन्द्रकुमार सिंह

देशबन्धु अग्रवाल

ब्रह्मदेव शर्मा देव

अनिल कुमार अनल

सम्पर्क–सार्थक-सृजन प्रकाशन

१५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़–२०२००१

—समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र अलीगढ़।

Scanned by CamScanner

काव्य को रसात्मक व्याख्या करने के लिये आचार्य भरत मुनि ने अपने 'नाट्यशास्त्र, नामक ग्रन्थ में जिस भावसत्ता का सहारा लेकर काव्य की विवेचना की, वह भावसत्ता परवर्ती आचार्यों के लिये काव्य की एक महत्वपूर्ण कसौटी बन गयी। 'विभावानुभाव व्यभिचारी संयोगाद रसनिष्पत्तिः।' सिद्धान्त को व्यापक और अतिव्यापक बनाते हुये 'रसात्मक वाक्यम् काव्यम्,' कहकर आचार्य विश्वनाथ ने काव्य की आत्मा रस सिद्ध कर डाली। अपने अंत या चरमोत्कर्ष तक पहुंचते पहुंचते रस की परिणति 'साधारणीकरण' जैसे सिद्धान्तों में हुयी।

लेकिन रस सम्बन्धी व्याख्या का दुर्भाग्यपूर्ण पक्ष यह रहा कि रस के आदिआचार्य भरतमुनि ने काव्य में रस की स्थापना के लिये जिस भावसत्ता को खड़ा किया था, वह भावसत्ता काव्य में किन तत्वों के आधार पर जन्म लेती है या विकसित होती है? इस ओर किसी भी रसाचार्य का ध्यान नहीं गया। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल भाव के भीतर ज्ञानप्रसार, ज्ञान के भीतर भावप्रसार की बात जरूर उठाते हैं, लेकिन भावप्रसार के भीतर ज्ञानप्रसार किस प्रकार होता है? यह प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाता है।

ज्ञान और भाव को दो अलग-अलग और विपरीत बिन्दु मानकर काव्य का रसात्मक विवेचन करने का परिणाम यह है कि एक तरफ जहाँ डा० नगेन्द्र जैसे रसमीमांसक काव्य का एकपक्षीय रत्यात्मक या श्रृंगारिक विवेचन करके प्रयोगवाद या छायावाद की धूनी रमाते हुये आनन्दवाद की समाधि लगा उठते हैं, वहीं डा० नामवर सिंह, आचार्य शुक्ल की ज्ञानप्रसार सम्बन्धी विवेचना से काव्य की अर्थमीमांसा तक पहुंचने की कोशिश तो जरूर करते हैं, लेकिन यह अर्थमीमांसा किस प्रकार रसमीमांसा में तब्दील होती हैं या होनी चाहिये, यहाँ तक आते आते उनकी बौद्धिकक्षमता चुकने लगती है।

काव्य की एकपक्षीय और अधूरी रसमीमांसा का परिणाम हमारे सामने है कि काव्य में बुद्धितत्व आज तक रसविरोधी तत्व या

रसाभास का आधार बना हुआ है, जबकि वैचारिकप्रक्रिया के बिना कोई भी रसप्रक्रिया सम्पन्न हो ही नहीं सकती।

वीरगाथा कालीन, भक्ति कालीन काव्य परम्परा से हटकर जब यथार्थवादी कविता का उद्‌भव हुआ, तो होना यह चाहिये था कि रस की जो परम्परागत कसौटी थी, या तो उस कसौटी को संशोधित कर वैज्ञानिक और व्यापक बनाया जाता या कविता के बदलते स्वरूप के अनुसार जिस प्रकार वात्सल्य, भक्ति और शान्त रस आदि खोजे गये ठीक उसी प्रकार इस यथार्थवादी, सत्योन्मुखी कविता में ऐसे नये रसों की खोज की जाती, जिनके आधार पर उक्त कविता का भी रसात्मक आंकलन हो सकता। लेकिन हिन्दी साहित्य की रसपरम्परा संस्कृत के रसाचार्यों द्वारा मीमांसित परम्परा से अलग कुछ भी मौलिक स्थापना या चिन्तन न दे सकी, अतः यथार्थवादी कविता को "बौद्धिक कविता" घोषित कर उसे भाव और रस से काटकर परखे जाने का एक ऐसा नया फैशन चल पड़ा, जो न तो रस प्रक्रिया के प्रति मौलिक दृष्टि रखता है और न उसे कविता की वैचारिकप्रक्रिया की मूलभूत पकड़ है।

काव्य की गीति-विधा तेवरी के प्रति भी इसी अपरिपक्व, अवैज्ञानिक चिन्तन शैली में यह बात जोर-शोर के साथ उछाली गई कि 'इन तेवरियों में रसपरिपाक्व या काव्यसौन्दर्य का अन्वेषण करना, बालू से रेशम निकालने जैसा होगा'। तेवरी की सौन्दर्यात्मकता और उसका रसात्मक बोध, रस या सौन्दर्य की परम्परागत कसौटी या परिपाटी के आधार पर निश्चित रुप से बालू से रेशम निकालने जैसी जटिल और कभी न हल होने वाली समस्या को ही जन्म देगा, क्योंकि हमारी दृष्टि बालू से रेशम निकालने पर ही टिकी हुयी है, नदी से बालू निकालने या रेशम के कीटों से रेशम प्राप्त करने पर नहीं। और यह प्रक्रिया निस्संदेह रसप्रक्रिया से हटकर रस की खोज निकालने की प्रक्रिया है।

अतः आज जरूरी यह है कि हम रस निष्पत्ति के सिद्धान्तों को वैज्ञानिक दृष्टि के साथ पुनः परखें और उन कारणों का पता लगायें जिनके कारण वर्तमानकविता रसाभास, रसहीनता, सौन्दर्य विहीनता की शिकार है। मेरी दृष्टि में इसके निम्न ऐसे कारण

Scanned by CamScanner

अवश्य हैं जिन्हें दृष्टिगत रखे बिना न तो रसात्मकबोध को समझा जा सकता है और न कविता के सौन्दर्य की व्याख्या की जा सकती है

१ — रस शास्त्रियों को अब यह बात समझ में आजानी चाहिए कि आश्रम के मन में किसी भी भाव का निर्माण विचार के कारण ही होता है। हमारे मन में क्रोध तब तक जाग्रत नहीं हो सकता, जब तक कि हम यह निर्णय न लेलें कि अमुक व्यक्ति या पात्र ने हमारा अपमान किया है या उसका उद्देश्य हमें किसी भी प्रकार की शारीरिक, मानसिक या आर्थिक हानि पहुंचाना है। किसी भी व्यक्ति को दी गयी गाली हर हालत में अपशब्द ही होती है; लेकिन हम हमेशा अपशब्दों का अर्थ अपशब्दों की तरह ही नहीं लगाते। अक्सर ऐसा देखने में आया है कि एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति को गाली देता है तो दूसरा व्यक्ति इस गाली का अर्थ प्रेममय या हँसी मजाक के लहजे में लगाता है। जब कि यही गाली से भरे हुये शब्द किसी अन्य व्यक्ति के लिये क्रोध का कारण बन सकते हैं।

२—रस परम्परा को आगे बढ़ाते हुये जिस प्रकार भरतमुनि के के परवर्ती आचार्यों ने काव्य में अन्य नये-नये रसों की खोज की, ठीक उसी प्रकार वर्तमान कविता ही नहीं, वीरगाथा कालीन भक्तिकालीन, रीतिकालीन कविता भी ऐसे अनेकों रसों में उदबोधित होती है जिनके खोज पहले न सही, आज बेहद जरुरी है। यदि पुत्र के अनुभावों से अर्थग्रहण कर किसी माँ में वात्सल्यरस की निष्पत्ति हो सकती है तो माँ के अनुभावों की अर्थमीमांसा किसी पुत्र को कौन से रस से सिक्त करेगी? क्या इस रस की खोज जरुरी नहीं है? ठीक इसी प्रकार एक पुत्र की मृत्यु पर एक माँ के मन में वात्सल्य उदबोधित होगा या करूणा? (क्योंकि आलम्बन के रूप में इस स्थिति में वत्स या पुत्र ही है। परम्परागत रसमीमांसा के आधार पर वत्स से उत्पन्न रस वात्सल्य ही होना चाहिये। जब कि ऐसी स्थिति में रस निष्पत्ति की स्थिति, दूसरी ओर इसके विपरीत हो जाती है।

३—अक्सर होता यह है कि हमारे पूर्ववर्ती आचार्यों ने जो संचारी भाव गिनाए हैं, वहीं संचारी भाव कभी कभी काव्य में स्थायी भाव बनकर उभरते हैं, इस स्थिति में कौन से रस की निष्पत्ति होती है?

Scanned by CamScanner

४—रस निष्पत्ति के अन्तर्गत अभिनव गुप्त द्वारा दिया गया साधारणीकरण जैसा सिद्धान्त चाहे आज सर्वमान्य घोषित कर दिया हो और उसे तादात्म्य, सह–अनुभूति जैसी सैद्धांतिक चुहलबाजियाँ कितना भी व्यापक, सारगर्भित और प्रामाणिक ठहराने की कोशिश करें लेकिन इस सच्चाई से इन्कार नहीं किया जा सकता कि एक आश्रय या आस्वादक जिस प्रकार के वैचारिक संस्कारों से संस्कारित होगा, उन संस्कारों के अनुसार ही उसमें रस की स्थिति देखी जा सकेगी। इसलिए यह सिद्धान्त हर आस्वादक पर लागू हो ही नहीं सकता। इसके लिये हमें यह देखना अवश्य पड़ेगा कि आस्वादक का आत्म अर्थात् उसमें रागात्मक चेतना किस प्रकार की है ? एक मार्क्सवादी चिन्तक रीतिकालीन काव्य से क्यों नाक भों सिकोड़ता है और एक ईश्वरीय सत्ता में विश्वास रखने वाले चिन्तक को, मार्क्सवादी साहित्य क्यों रस-हीन जान पड़ता हैं ? ऐसी स्थिति में कथित साधारणीकरण किसका, क्यों और कैसे होता है ? यह एक ऐसा प्रश्न है जो रस को गूंगे के गुड़ के स्वाद से नहीं, ज्ञान के उन तत्वों से जोड़ने की मांग करता है, जिससे हमारे रसवादी अक्सर कतराकर ऐसे जुमले उछालते हैं, कि "रस वेद्यान्तर स्पर्शशून्य है अर्थात जिस समय रस-स्वरूप आनंद की अनुभूति होती है, उस समय किसी अन्य प्रकार के ज्ञान का स्पर्श नहीं होता, रस में हम पूर्णतया लीन हो जाते हैं।"

५—डा० राकेश गुप्त मानते हैं कि "किसी भी काव्य का पाठक काव्य के आस्वादन के समय दो प्रकार की संवेदनात्मक या प्रतिवेदनात्मक प्रतिक्रियाओं में से कोई भी प्रतिक्रिया कर सकता है यह प्रतिक्रिया की स्थिति ही उसकी रसात्मकबोध की अवस्था होती है" यहाँ इस बात को समझ लेना अति आवश्यक है कि चाहे काव्य के पात्र हों या काव्येतर पात्र, संवेदनात्मक या प्रतिवेदनात्मक क्रिया के मूल में रति या विरति की स्थिति आश्रयों के मन में अवश्य उद्बोधित होगी। यह रति के रूप में शृंगार, वात्सल्य, भक्ति आदि तथा विरति के रूप में भयावहता, जुगुप्सा, रौद्रता आदि को स्पष्ट करेगी, न कि मात्र संवेदनात्मक या प्रतिवेदनात्मक क्रिया को। ऐसा क्यों होता है कि आलम्बन के रूप में जब सूर्पणखाँ अपने अनुभावों से रति या प्रणय

निवेदन को उजागर करती है तब राम के मन में रति के विपरीत विरति या क्रोध के अनुभाव जाग्रत हो उठते हैं ? इसका उत्तर रसमीमांसा को अर्थमीमांसा से जोड़े बिना नहीं दिया जा सकता और न संवेदनात्मक और प्रतिवेदनात्मक क्रिया कहकर बात पूरी की जा सकती है। इसके लिये जरूरी यह है कि काव्य के आस्वादक या काव्य के पात्र के संस्कार किस प्रकार के हैं, पहले यह खोज की जाय तत्पश्चात यह देखा जाय कि वह आलम्बन की क्रियाओं अर्थात अनुभावों से, अपने आत्म के अनुसार, किस प्रकार का अर्थ ग्रहण कर रहा है ? चूंकि संस्कार रूप में हमारे निर्णय मन के भीतर सुप्तावस्था में पड़े रहते हैं (न कि भाव या स्थायी भाव) इसलिये आवश्यक यह है कि निर्णयों अर्थात वैचारिक अवधारणाओं के अनुसार रसात्मक बोध को समझा जाय न कि भाव या स्थायी भाव अनुसार। भाव या स्थायी भाव तो हमारे निर्णयों के अनुसार बनते बिगड़ते रहते हैं। शेर को जब तक हम यह अर्थ नहीं दे देते कि 'वह हम पर झपट सकता है हमें हानि पहुंचा सकता है, तब तक हमारे मन में भय की अवस्था अपने चर्मोत्कर्ष पर नहीं पहुंच सकती। पिंजरे में कैद शेर को देखकर हम भयग्रस्त होने के बजाय अद्भुत रस से इस कारण सिक्त होते हैं क्योंकि हम यह अच्छी तरह समझते हैं कि शेर पिंजरे में है वह हमें अब किसी भी प्रकार की हानि या असुरक्षा नहीं दे सकता। इस परिस्थिति में निर्भय होकर नरभक्षी शेर को देखने की जिज्ञासा ही हमारे मन में अद्भुत रस का संचार करती है। यहां चिन्तन का विषय यह है कि आलम्बन के रूप में शेर दोनों स्थितियों में मौजूद है लेकिन आश्रय के मन में उद्‌बुद्ध रस विभिन्न या भिन्न-२ प्रकार के हैं। आश्रय के मन में उद्‌बुद्ध उक्त रस सम्बन्धी भिन्न--भिन्न दशाएं अर्थग्रहण की प्रक्रिया द्वारा ही स्पष्ट की जा सकेंगी न कि मात्र भाव के उद्‌बोधन के आधार पर।

तेवरी के रसात्मक बोध को स्पष्ट करने के लिए आवश्यक यह है कि इसकी रसमीमांसा को अर्थमीमांसा से जोड़ते हुये इसमें संस्कारित वैचारिक अवधारणाओं, मानव मूल्यों की स्थितियों को परम्परागत संस्कारों से काटकर इसके आस्वादन की प्रक्रिया को उस आस्वादक की प्रक्रिया से जोड़ा जाए जिसके संस्कार मानवतावादी और

प्रगतिशील हों। तभी उसमें संवेदनात्मक प्रतिक्रिया जाग्रत हो सकती है।

तेवरी का सौन्दर्य उस प्रतिवेदनात्मक क्रिया से ही उजागर हो सकता है जिसमें सर्वग्रासी और शोषक व्यवस्था या उसके पात्र, आश्रय के मन में क्षोभ, असन्तोष, आक्रोश और विरोध का संचार करते हैं। इस स्थिति में तेवरी परम्परागत रसों के साथ-साथ, कई 'नये रसों को खोजे जाने की माँग' रसाचार्यों या रसमीमांसकों से कर रही है।

तेवरी की संवेदना या रागात्मकचेतना चूंकि शोषित या दलित वर्ग के साथ जुड़ी हुयी है, जिसे शोषक वर्ग द्वारा लगातार खण्डित किया जा रहा है, अतः उक्त रागात्मक चेतना को खण्डित करने वाले वर्ग के प्रति तेवरी में प्रहार, ललकार, चीख आदि के अनुभाव गोचर हो रहे हैं। इन अनुभावों को तेवरी की अन्तरसंज्ञा में बीज रूप में स्थित करुणा की वैचारिकप्रक्रिया से जब तक नहीं जोड़ा जाता तब तक तेवरी की रस प्रक्रिया, उसके आस्वादकों में असौन्दर्य और रसाभास की स्थिति ही पैदा करती रहेगी।

रमेशराज

करती प्रकाशन की बेजोड़ कृतियाँ

१— 'विरासत दर्द की' कवि-अजय अंचल, मूल्य ८ रुपया
२— 'खाइयों का दर्द' कवि- सुरेन्द्र श्लेष मूल्य ८ रुपया
३— 'साँस बाकी है' सं० यादराम शर्मा, मूल्य ८ रुपया
४— 'दिवास्वप्न' कथाकार—किशन रावत, मूल्य ८ रुपया
५— 'अक्षर-अक्षर अंगारा' तेवरीकार,ज्ञानेन्द्र साज, मू. ८ रुपया

सम्पर्क—जर्जर कश्ती, सं० ज्ञानेन्द्र साज, 17/212 जयगंज, अलीगढ़

अभिनव प्रकाशन की सार्थक भेंट

१— 'कारवाँ' सं० यादराम शर्मा, मूल्य १२ रुपया
२— 'उठा-पटक' (शीघ्र प्रकाश्य) सं० यादराम शर्मा, मूल्य....

सम्पर्क—अभिनव भावाञ्जलि (त्रैमा.) सं० यादराम शर्मा, पैंठ बाजार, नई कालोनी, कासिमपुर (अलीगढ़)

Scanned by CamScanner

हुजूर, परवरदिगार,
मुल्क के खिदमतगार !
कान्वेन्टी, नर्सरी, मांटेसरी
शिक्षा के कर्णधार !!
अंग्रेजियत के पालनहार,
गुड मार्निंग, गुड मार्निंग सरकार !!!

मैकाले की (ना) जायज सन्तान
तुमसे धन्य है नया हिन्दुस्तान
शिक्षा-जगत के सूबेदारो,
नकलची बुद्धितन्त्र के कारखाना-मालिको
धन्य है तुम्हारा जड़तन्त्री योगदान !
(मेरा भारत महान !!)

शिक्षा-संस्कृति कला के ठेकेदारो,
छद्म विकास के रचनाकारो,
देशीयता के आधुनिक भाष्यकारो,
दिल्ली—दरबार के परम्पराकारो,
वाह, ज्ञान-विद्या--मनीषा के कर्त्तार !
(शिक्षा-व्यवस्था का जवाहरी रोजगार)

गांधीवाद के सुसभ्य मारीचो,
आजाद, तिलक, बोस के असली हत्यारो,
स्व-राज के ढकोसलाकारो,
बयालीस साल का तुम्हारा इतिहास
एक योरोपीय हिन्दुस्तान का विकास
स्पाइडरमैन, कॉमिक्स की फसलें
चारों ओर आज ?
(डूबा सकल समाज..........!!)

तमसो मा ज्योतिर्गमय....
विद्या धनं सर्वधनं प्रधानम्........

विद्ययाऽमृतमश्नुते........
येषां न विद्या...., न हि ज्ञानेन सदृशम्
सभी की फूटी गगरी !
(शिक्षे........नौकरी के हित बनी !)

कहीं पब्लिक स्कूल, कहीं नवोदय स्कूल,
खोखली सरकार के ताल से, मिलाते ताल
शिक्षा लॉटरी स्टाल
घरेलू लघु उद्योग का मायाजाल
लूट तन्त्र की कोचिंग मालामाल !
(ज्ञान, विद्या, बौद्धिकता का अब कहाँ अकाल !!)

गड्ड-मड्ड है सारा निज़ाम
सुव्यवस्थित दुर्व्यवस्था का पूंजीवादी पैग़ाम
उपभोगवादी संस्कृति नया मोहक नाम
सामाजिक पतनशीलता का वैधानिक इन्तजाम
आजादी का यही नया तराना है !
(हमें नव राष्ट्र बनाना है !!)

देश जल रहा है, रोटी सेंकिये
समाज गल रहा है, बोटी नोचिये
लूट, खोखलेपन का मिल कर गायें गाना
कुछ हाथ हम बढ़ायें, कुछ हाथ तुम बढ़ाना
देश को जकड़ने का खूब है बहाना !
(कहीं पे निगाहें, कहीं पे निशाना !!)

हुजूर परवरदिगार, माई-बाप
हम निस्पृह—निरीह-अज्ञानी लोग
आप के गुलाम, इस शिक्षा के गुलाम
मोह भ्रम.मायाचार के सीरियलों को सलाम
इस शिक्षा से मोह भग न होने दें
मुल्क के खिदमतगार !
[गुड मार्निंग, गुड मार्निंग सरकार !!
....

* धीरेन्द्र शर्मा
(51, S. C. बसु रोड, इलाहाबाद)

तेवरी पक्ष – 11

तेवरी-पक्ष

पाठकीय

अलीगढ़

- ओजस्वी तेवरियाँ पढ़ कर मन बरबस ही प्रशंसा करने को उत्सुक हो उठता है।

चन्द्र पाल सिंह यादव मयंक, कानपुर

- दर्शन बेजार की तेवरियों का जवाब नहीं।

● दामोदर दत्त दीक्षित, मेरठ

- आपका प्रयास एवं परिश्रम अभिनन्दनीय है।

● डॉ० कमल पुंजाणी, जामनगर

- बेजार साहब मन को छूते हैं।

● यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', बीकानेर

- आप बिना विपरीत आलोचनाओं से भयभीत तेवरी की स्थापना के लिये अनवरत संघर्ष कर रहे हैं।

● डॉ० परमलाल गुप्त, सतना

- छोटे बड़े सभी कलमकारों ने आपके किये की प्रशंसा की है, फिर आप इतने बावले क्यों हुए जा रहे हैं ? तेवरी, तेवरी रहे या गजल इसे पाठकों, समीक्षकों पर छोड़ें और अपनी रचनाशीलता बनाए रखिये।

● नीतीश्वर शर्मा नीरज, मुजफ्फरपुर

- मुद्रण पर ध्यान दो ? क्या कोई दूर-दराज का पाठक यह मानकर चले कि तेवरीपक्ष अब भी किसी अनाड़ी और गैरजिम्मेदार व्यक्ति के हाथों सम्पादित हो रही है। सिर्फ अच्छा मेटर ही सब कुछ नहीं होता।

● धीरेन्द्र शर्मा, इलाहाबाद

- सम्पादकीय में तेवरी रचनाशीलता की व्याख्या मौलिकता से सम्पृक्त धीरेन्द्र शर्मा द्वारा प्रशासन व्यवस्था पर प्रहार, बेजार की सोलह तेवरियां लोकतंत्र की बदशक्ल पर कील एवं व्यवस्था के द्वार पर करारा दस्तक हैं।

● मदन मोहन उपेन्द्र, मथुरा

Scanned by CamScanner

- पाश, हाश्मी व गोरख पाण्डेय की परम्परा एक आन्दोलन में बदले, इसकी अनुभूति आपके जन-जागरण का वैचारिक पक्ष है और हमारे लिए गौरव की बात है।

  वरदी चन्द्र राव 'विचित्र', आमेट

- कचरा साहित्य और महंगी होती पत्रिकाओं के बीच तेवरी मील का पत्थर साबित हो रही हैं, दर्शन बेज़ार की तेवरियां भीतर तक चेतन्य करती हैं।

  संतोष 'चंचल', सागर

- यदि साहित्यकार शाश्वत मूल्यों के प्रति सचेत न करते रहें तो सामाजिक पतन किस सीमा का स्पर्श कर ले कहा नहीं जा सकता, आप पत्रिका के माध्यम से अपना सक्रिय साहित्यिक योग दान दे रहे हैं।

  अशोक लव, दिल्ली

- स्पष्ट सम्पादकीय, आलोचनात्मक दृष्टि और एक से बढ़कर एक तेवरियां।

  विक्रम सोनी, इंदौर

- इसमें कोई शक नहीं कि अपने पक्ष की भारत में एकमेव पत्रिका है।

  कपिल पाण्डेय, बम्बई

- नवगीत, क्षणिकाएँ व लघुकथा का समावेश पत्रिका को पूर्णता प्रदान करता है, बेजार की तेवरियां धारदार, धीरेन्द्र शर्मा की व्यंग्य रचना अनूठी हैं।

  प्रकाश तातेड़, आमेट

- समझदार हो गए हो तेवरी के साथ। सुधरने का क्या लोगे ? पहले सामान्य आदमी बनो, साहित्यकार तो बन ही जाओगे।

  नन्दल हितैषी, इलाहाबाद

- सम्पादकीय में गजल एवं तेवरी में अन्तर स्पष्ट कर और तेवरी को परिभाषित कर एक स्तुत्य कार्य किया गया है- दर्शन बेजार देवेन्द्र गौतम, धीरेन्द्र शर्मा, जगदीश श्रीवास्तव और आभा गुप्ता प्रभाव छोड़ते हैं।

  सीताराम शेरपुरी, समस्तीपुर

- तेवरीपक्ष का प्रथम पुष्प पढ़कर संतोष हुआ।

  पं॰ सुरेश चन्द्र पवन, अनूपशहर

- निरन्तर गजल को नकारते रहना ही सिद्ध करता है कि तेवरी-कारों के भीतर गजल कहीं गहरे पैठी हुई है। तेवरी यदि समय

की माँग है, तो वर्तमान में उसे स्थापित होना ही चाहिए। मैं रचना का पक्षधर हूं, किसी विधा विशेष का नहीं।

● मुकुट सक्सैना, जयपुर

और ये भी...

आपके द्वारा लिखी गयी सम्पादकीय के तहत बहुत-सी जानकारियाँ मिली. आपने लिखा है कि गजल और तेवरी में निम्न कारणों से अंतर है—

१—गजल प्रेमी, प्रेमिकाओं के बातचीत के घनीभूत को गजल कहते हैं, जबकि तेवरी में वर्तमान त्रासदियों की अभिव्यक्ति है।

यहां पर आपने गजल के शब्दार्थ को प्रकट किया है और अगर इसी तरह तेवरी को लिया जाये तो उसमें सिर्फ 'तेवर' के प्रकट होने को ही लिया जा सकता है। अगर तेवर के सही अर्थ को लिया जाय तो सिर्फ 'आक्रोश' को ही उत्पन्न किया जा सकता है न कि असहाय और पीड़ित जन की चीत्कार को : अगर इसे सामान्य रूप में लिया जाय तो वे तमाम प्रक्रियाएँ इसके अंतर्गत आ सकती हैं जो अंत:करण की प्रतिभूत संवेदना, आत्मभंगिमा, सुख-दुःख, मनुहार, व्यक्तिपिपासा आदि तमाम प्रक्रियाओं से गुजर सकती है और यह उत्पीड़न आज की अभिव्यक्ति से भी उत्पन्न हो सकता है और हीर-राँझा के सम्बन्ध में भी हुआ होगा. यह ध्यान रहे कि यहां पर मैं सिर्फ अर्थ से ले रहा हूं दूसरी ओर तेवर से मनःस्थिति के भटकाव को भी लिया जाता है, जैसे तेवर बदलना। ऐसी स्थिति में कैसे कहा जाय कि 'गजल' प्रेमी-प्रेमिकाओं के वार्तालाप को ही कहा जायेगा और 'तेवरी' को जोश, आक्रोश, ललकार, चीत्कार ही कहा जायेगा।

२. आपने लिखा है कि हमारा रीतिकालीन काव्य गजल जैसी तकनीकी व्यवस्था का ही आधार है। केशव, घनानन्द, रत्नाकर आदि इसके उदाहरण हैं—

ऊबत हो डूबत हो उगत हो डोलत हो
बोलत न काहे प्रीतिरीतिन रितै चले।
कहै पदमाकर त्यौं उससि उसासन सों
आंसू है अपार आइ आंखिन दतै चले।

औधि ही के आगम लौं रहत बनै तो रहौ
बीच ही क्यों बैरी बधवेदनि बितै चले।
※ रे मेरे प्रान कान्ह प्यारे के चलाचल में
तब तो चले न अब चाहत कितै चले॥

कृपया स्पष्ट करें कि इसमें गजल की कौन-सी तकनीक जुड़ी हुई है? क्या सिर्फ इसलिये कि दोनों श्रृंगार-रस से ओत-प्रोत हैं? अगर इतना-भर से जुड़ रहा है तो नितांत गलत है। तेवरी की तकनीक क्या है? स्पष्ट नहीं है।

● रमेश श्रीवास्तव, गया

यह सत्य है कि गजल का विशिष्ट शाब्दिक अर्थ होता है उसकी भावपक्ष व कलापक्ष की सीमाओं के रूप में भी नियत मान्यतायें हैं तो क्या इन सब के अभाव में उसकी अनुकृति को तेवरी या ऐसा ही अन्य उपयुक्त नाम देना साहित्यकार के लिए अनिवार्य बाध्यता है? क्या 'दोहा' का नया नामकरण करने की आवश्यकता प्रतीत हुई है।

इसी तरह 'गीत' एक विशिष्ट विधा है जो अनेक रूपों मे स्वीकार्य है, ग्राह्य है और गेय है. उसे नवगीत अनुगीत कहकर भले ही अलग पहचान स्थापित करने का प्रयास किया है,किन्तु अन्ततः उसे भी गीत ही कहा जायेगा।

आपका गजल के सन्दर्भ में नवीन आन्दोलन निश्चित ही स्वागत योग्य है, किन्तु मेरे मन्तव्य से इसे और गति देने की अपेक्षा है. नाम बदलना अभीष्ट नहीं होना चाहिये। गजल को 'गीतिका' नाम अधिक दायित्वपूर्ण है एवम् उद्देश्यपरक भी.

तेवरी के तेवर भी सामान्य जन-जीवन की भावभंगिमा दर्शाते हैं। अतः 'तेवरी' के लिये बढ़-चढ़ कर तेवर दिखाने की आवश्यकता नहीं है. जो चाहे जिस रूप में मानो,अन्ततः नापने का मीटर 'गजल' ही रहेगा. अथवा भावों की ट्रेन उन दो समान्तर पटरियों पर से उतर जायेगी और तब जो मलवा मिलेगा,वह नई कविता, अगीत,अकविता,अतुकांत कविता आदि सब होगा, किन्तु गजल/तेवरी नहीं होगी. बन्धु 'बेजार' का आत्म कथ्य सुनकर लगा कि जैसे उन्होंने तेवरी लिखकर कोई किला फतह कर लिया हो.

जब गजल से पोंछ पाया मैं न आंसू की व्यथा,
तब मुझे बेजार होकर तेवरी लिखनी पड़ी।

वस्तुतः यह कोई आश्चर्य नहीं, तेवरी गजल को तोड़कर बनायी गई, नई आलीशान इमारत है, जिसकी नींव गजल के पूर्वजों ने रखी थी.

● गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र', सीतापुर

कविताएं—

—मोहन स्वरूप

१— जातिवाद

यू०पी० की मिट्टी से उपजे
कितने दर्शन, कितने वाद ?
जयशंकर का रहस्यवाद..........
महादेवी का छायावाद...........
प्रेमचन्द का यथार्थवाद,
पर यह किसको रहा याद ?
जबसे पनपा जातिवाद।

२— आदिमानव की संतान

हम, सिर्फ हम,
यह हमारे अन्दर का अहं
किसने जगाया है इसको ?
आदिमानव, हमारा पुरखा
पूछता है चीखकर-
किसने अलगाया है हम सबको
कहाँ से आये थे हम ?
कहाँ पे जाना है हमको ?
शून्य से जन्मे थे हम,
शून्य में जाना है हमको,
शून्य से शून्य की यह जीवनयात्रा
किसने जाना है इसको ?
फिर क्यूं ?
सड़कों पर यह खूं के निशां
दीवारों पर चिपके मास के लोथड़े
हमको चकनाचूर करते
कबतक रहेंगे चलते ?
धर्म और जाति के,
भाषा और क्षेत्र के,
ये खूनी सियासी हथोड़े

अपर जिलाधिकारी (नगर)
इलाहाबाद

५०15

सहयोगी पत्र-पत्रिकाएं

प्रश्न : सं० अरुणप्रिय, सिवोली प्रकाशन, २-ए/३७७ ए, आजाद नगर, कानपुर-२०८००२

सम्यक : सं. मदन मोहन उपेन्द्र, ए-१० शान्ति नगर महोली रोड मथुरा

समर्चना : सं० प्रमथनाथ मिश्र, प्रभात तारा परिसर, धुर्वा, राँची

आलोक डाइजेस्ट : सं० अमिय देव शंकर, ज्ञानपुर, वाराणसी

अंकुर आवाज : सं० कुमार प्रशांत, ४३ चन्द्र लोक, प्रतापनगर, आगरा

निकष : सं० प्रकाश तातेड़ आमेट-३१३३३२ उदयपुर (राज.)

कविता : सं० भागीरथ भार्गव, कृष्णायन १८ आर्यनगर, अलवर

कारखाना : सं० रमेश नीलकमल, ७११सी, गोल्फ रोड, ईस्ट कालोनी जमालपुर ८११२१४

युवा सुरभि : सं० राजेन्द्र जादौन, जनरल गंज, मथुरा (उ.प्र.)

पंथ : सं० डा. विश्वभान देवलिया, सी/1 सरस्वती विहार, जबलपुर

यथाशक्ति : सं० मधुर, आर-१०/ऐफ ५८, नया राज नगर, गाजियाबाद

किसलय : सं० सुरेश कुमार, मण्डल कार्यालय-पूर्व रेलवे, धनबाद

मित्र संगम : सं० प्रेम बोहरा, ३५ बी, पुरानी गुप्ता कालोनी, दिल्ली-९

मत्स्य दूत : सं० वेद प्रकाश सिंघल; सिंघल प्रिंटर्स, भौकम सैय्यद, अलवर

तीसरी आंख : सं. बिन्देश्वर प्रसाद, करबिगहिया, पटना

उन्मुक्त : सं. सीताराम शेरपुरी, तरुण सांस्कृतिक चेतना समिति, मऊ शेरपुर (समस्तीपुर)

काव्य प्रसून : सं. कमाल अहमद उत्साही, कटरा डा-रुदौली, बाराबंकी

सन्देश : सं. राजीव गुलाटी-पो.बा. ६२५२, ९/४४ उद्योग नगर, कीर्ति नगर दिल्ली-१५

गौर दर्शन : सं. भोलाराम भारतीय, विजय टाकीज के पास, सागर

सुमन लिपि : सं. जीत सिंह चौहान, बी २१/२०३ गोकुल धाम, गोरेगाँव (पूर्व) बम्बई-६३

मृत्यु का आलिंगन : सं. कुं. रूपसिंह, निकट जनाना अस्पताल, बुलंदशहर

उत्थान : सं० निशान्त, भनोत इलेक्ट्रिकल वर्क्स पीलीबंगा

मनीष टाइम्स : सं० वीर सिंह, आदर्श प्रिंटर्स. बानौरिया मार्ग, जनक नगर, सहारनपुर

आकंठ : सं० हरीशंकर अग्रवाल, आजाद वार्ड पिपरिया, म०प्र०
प्रगल्भ : सं० रामचन्द्र शर्मा, ५०, कायस्थवाड़ा, देवबन्द
भारती : ब. हि. विद्यापीठ,, भौगोजी कीट मार्ग, माहीम, बम्बई
प्रसंगवश : सं. वेदप्रकाश अमिताभ, अशोक भवन, मानसिंह गेट, अलीगढ़
नालंदा दर्पण : सं० डा० स्वर्ण किरण, सोहसराय, नालंदा
पान : सं० केदार नाथ वर्मा, २/१८१, नवाबगंज कानपुर
कमलदंश : सं० योगेन्द्र मौदगिल, पो० बा० ६०, पानीपत
अग्निज्वाला : सं० वीरेन्द्र जैन पहाड़ वाले, २१ चौक, नजीबाबाद
दहेज दानव : २६. पूरी टोला, छांछीकुंआ लखनऊ
अनुप्रेक्षा : सं० डा० रजनीकांत, ६८७, सिविल लाइन्स उन्नाव
दृष्टिकोण : सं० संदीप शर्मा नीलम, तलैया मौहल्ला, गुना
कल हमारा है : सं० सत्यवीर, २०३/४३, सदर बाजार, मुजफ्फरनगर
साहित्य प्रोत्साहन : सं० राजेन्द्र श्रीवास्तव, २२० वशीरतगंज, लखनऊ
विद्युत कर्मचारी : सं० के.के. सिंह, ए-६४८/५, इन्द्रिरा नगर, लखनऊ
आकलन : सं० हरजिंदर सिंह सेठी, ४५/३, मुलुंड कालोनी, बम्बई
सुपरब्लेज : सं० प्रभाकपूर, ११ कैवल बिहार, सहस्त्रधारा मार्ग, देहरादून
आराधना : ३सी-१४, नई रोहतक रोड, करोल बाग, नई दिल्ली
गैरिक परिवार : सं० वेदप्रकाश अरोरा, डबवाली (हरि०)
अर्पण (वार्षिक) : सं० वरदीचन्द्र राव विचित्र, आमेट [राज.]
युग मर्यादा : सं० नरेन्द्र सिंह, १७४/३ पैलेस कालोनी, मण्डी (हि.प्र.)
अभिप्रेरणा : सं० वीरेन्द्र शर्मा, सराय गरीबा, पुरानी मन्डी, सहारनपुर
अभिनव प्रत्यक्ष : सं० नरेन्द्र, न्यू लंगर टोली, पटना
अंचल भारती : २/४५१, देवरिया रामनाथ, देवरिया
आम आदमी : नव लेखन प्रकाशन, मेन रोड, हजारीबाग
निष्कर्ष : ५६, खैराबाद, सुल्तानपुर
दस्तावेज : बेतियाहाता, गोरखपुर
सम्बोधन : चांद पोल, कांकरोली (राज०)
उन्नयन : ३०६, त्रिवेणी रोड, कीट गंज, इलाहाबाद
धुँआ : सिलीगुड़ी बाजार, दार्जिलिंग
क्रांतिमन्यु : सं० तारा चन्द्र बेकल, २१८, शास्त्रीनगर, मेरठ

।। लोकतन्त्र के हत्यारों के खिलाफ ।।

दर्शन बेजार अब हिन्दी साहित्य में सम्मान के साथ पुकारे जाने वाला एक नाम है । विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से वे अपनी सशक्त और सार्थक रचना-धर्मिता का परिचय सुधी पाठकों को देते रहे हैं । उनका तेवरी विधा पर प्रथम स्वतंत्र तेवरी संग्रह 'एक प्रहार: लगातार' जब १९-८५ में प्रकाशित हुआ, तो वे अपनी प्रहार और चुनौती से युक्त व्यंजनात्मक शैली के लिए पूरे भारतवर्ष में सराहे गये । इसे इस देश का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि उनकी इस राष्ट्रीय चिन्तनशीलता, जनसापेक्ष रचनाधर्मिता को लोकतंत्र का ढोंग रचने वाली व्यवस्था की शक्तियों ने शक की निगाह से देखा ।

लेकिन 'बेजार' लोकतन्त्र के हत्यारों के सामने आत्मसमर्पण करने वाला कोई कायर व्यक्तित्व नहीं ? वह आज भी अपने राष्ट्र के आकुल व्याकुल मन को खुशहाली प्रदान करने के लिए साम्प्रदायिक, असामाजिक बुर्जुआ और साम्राज्यवादी शक्तियों से (अभिव्यक्ति के स्तर पर) लगातार जूझ रहे हैं । इसी वर्ष उनका दूसरा तेवरी संग्रह 'देश खण्डित हो न जाए' प्रकाशित हुआ है । प्रस्तुत है—'तेवरीपक्ष' में उसकी द्वितीय कड़ी

→

Scanned by CamScanner

सत्रह

वेदनाओं को समर्पित जिन्दगी
हर खुशी से आज वंचित जिन्दगी।

सिर्फ खण्डहर की तरह विश्वास हैं
किस तरह अब हो व्यवस्थित जिन्दगी ?

सामना सच्चाईयों से क्यों करें ?
जी रहे जब लोग कल्पित जिन्दगी।

यातनाओं के शिविर में आजकल
युद्धबन्दी-सी अचर्चित जिन्दगी।

स्वार्थों की खाइयों में क्या गिरे ?
हो गयी खुद से अपरचित जिन्दगी।

**

Scanned by CamScanner

अठारह

हर तरफ पड़ते सुनाई बेसुरे-से राग
सभ्यता के नाम पर हैं सिर्फ खूनी फाग ।

हर तरफ कायम हुए हैं लूट के आदर्श
देश की खातिर यहाँ अब कौन करता त्याग?

स्वार्थों की रोटियाँ अब सब रहे हैं सेंक
भाग्य से उनके लगी है गैर के घर आग ।

त्रासदी यह मुस्करा क्यों सह रहे हैं आप ?
आप के कोमल बदन को डस रहे नाग ।

रामराज्यी स्वप्न सारे हो गये बेजार
नौजवाँ मेरे वतन के नींद से अब जाग ।

**

Scanned by CamScanner

उन्नीस

अन्याय के शैतान का सिर धड़ से उड़ा दो
'हम जुल्म के खिलाफ हैं' दुनियां को दिखा दो।

मजहब का नाम लेके जमीं बाँटने वाली
हो चाहे हसीं, किन्तु वो दीवार गिरा दो।

जो कायरों की व्यंजना को व्यक्त करता हो
उस शब्द के भीतर जरा बारुद बिछा दो।

और अब होने न देंगे देश के सौदे
इन देश के सौदागरों को आज बता दो।

बर्फ भी देने लगेगी आग के भाषण
'बेजार' इस माहौल को तुम गर्म बना दो।

**

Scanned by CamScanner

बीस

मुफलिसी में भूख हद से बढ़ गयी
पेट में कीलें अनेकों जड़ गयी।

प्यार का मतलब बचा बस रोटियाँ
प्यार की भाषा अनोखी गढ़ गयी।

थीं अभावों की चहकती महफिलें
जिन्दगी जिनमें अकेली पड़ गयी।

कौन अब किसकी सुरक्षाएँ करे ?
कोतवाली में डकैती पड़ गयी।

**

Scanned by CamScanner

इक्कीस

ढेर सारी रोशनी दिखती जिधर
आदमी क्यों मिल रहा अन्धा उधर ?

देखिए इस दौर में सद्‌भाव का
खून से जबड़ा सना आता नजर।

रोंद डाली बाढ़ ने इन्सानियत
धर्म की नदियों में जब उट्‌ठी लहर।

आप इसको शान्त होकर बाँचिए
खौफ में डूबा हुआ 'खत' है शहर।

**

Scanned by CamScanner

बाइस

धूप में क्यों हैं बटोही अनमने ?
आगे चलकर हैं बहुत साये घने ।

वे सही अर्थों में हिन्दुस्तान हैं
फुटपाथ ही जिनके लिये हैं घर बने ।

अब सहे जाते नहीं आघात ये
कह दिया उस रोज भूखे पेट ने ।

वक्त के हाथों व्यवस्था की छुरी
और हम ऐसे खड़े, ज्यों मेमने ।

**

Scanned by CamScanner

तेईस

हम मिले जिनसे कुछ प्यार के अक्षर लेकर
राह में बैठे हैं वही अर्थ के खंजर लेकर।

झूठ कैसे सामना करता है, हम देखें जरा ?
कह रहा है सत्य ये अब हाथ में पत्थर लेकर।

किसमें हिम्मत जो जिये शिव की तरह साथी
कौन मुस्काता है अब कण्ठ में जहर लेकर ?

मेरे मेहमान ही घर आके मुझे लूट गये
मैं उन्हें ढुँढ़ता फिरता हूँ निगहतर लेकर।

होके मायूस जमाने की मेहरबानी से
जिन्दगी फिर उड़ी 'बेजार' कटे 'पर' लेकर।

**

Scanned by CamScanner

चौबीस

और कब तक धैर्य को बाँधे रहें ?
जुल्म जो होते रहें, सब कुछ सहें ?

होंठ हैं गर होंठ, 'ना' कह जायेंगे
आपके संग लाख हाँ मैं हाँ कहें ।

हम नहीं, जो स्वार्थी हों वे सुनें
जिस तरफ की हो हवा, उसमें बहें ।

अब नहीं होगा सहन ये सिलसिला
धूल की जमती रहें हम पर तहें ।

मानते हैं शक्ति-स्तुति धर्म है
धूर्त को पर देवता कैसे कहें ?

**

Scanned by CamScanner

पच्चीस

खून के धब्बे न अब तक सूख पाये
आ गये फिर लोग लो खंजर उठाये।

रोशनी की बात करता जो सभा में
सैकड़ों घर के दिये उसने बुझाये।

रक्तरंजित हो गयी क्यों ये धरा तब ?
हर किसी ने गौतमी नारे लगाये।

हो जहाँ आदर्श हिंसा और मातम
आपको ऐसे तराने रास आये।

शहर की खामोश आँखें कह रही हैं
खून की कोई न अब नदियाँ बहाये।

Scanned by CamScanner

छब्बीस

एक सन्नाटा घना फैला हुआ
शहर दहशत में मिला डूबा हुआ ।

लाश जैसी हर जगह है जिन्दगी
गिद्ध है उस पर कोई बैठा हुआ ।

क्या करें चर्चा कोई खुशियों की अब ?
हर नजर में ख्वाब है भीगा हुआ ।

जब ठहाके मौत के गूँजे यहाँ
'बेजार' को देखा गया सहमा हुआ ।

**

Scanned by CamScanner

सत्ताईस

क्रान्ति का करने लगेगा जाप मेरा देश
ढूँढ लेगा राह अपने आप मेरा देश।

कल खुशी के दौर में भी देखना इसको
सह रहा माना अभी संताप मेरा देश।

अब न हत्याएँ करे कोई मोहब्बत की
शान्ति का छेड़े मधुर आलाप मेरा देश।

लाख है बेजार लेकिन जुल्म के आगे
रह न पायेगा कभी चुपचाप मेरा देश।

❁❁

Scanned by CamScanner

अट्ठाईस

बाँटनी चाही अगर धरती हमारी
खाक में मिल जायेगी हस्ती तुम्हारी।

हम से बढ़कर कौन होगा स्वाभिमानी ?
हैं सभी की मित्रता के हम भिखारी।

जिसमें इन्साँ के सिवा कुछ भी नहीं है
आरती उस धर्म की हमने उतारी।

शान्ति को मजबूर मत करना, नहीं तो
थाम लेगी हाथ में वह भी दुधारी।

सिर्फ नफरत में जिये जो, वे सुनें अब--
प्यार का हमने किया जयघोष जारी।

**

Scanned by CamScanner

उन्तीस

चल रहे कैसे इशारे हर तरफ ?
फिर दिखे खूनी नजारे हर तरफ।

पाप की काली घटाएँ क्या उठीं ?
सच के डूबे चाँद-तारे हर तरफ।

बन गये हैं अब प्रतिष्ठा के प्रतीक
लाठियाँ, भाले हमारे हर तरफ।

देश की खातिर कोई आया नहीं
'बेजार' ने कितने पुकारे हर तरफ ?

**

Scanned by CamScanner

तीस

जो उसूलों के लिये सम्बल रहा
आदमी अब हाथ अपने मल रहा।

बेच पाया जो न आखों की शरम
दर्द उसकी जिन्दगी में पल रहा।

आस्था-श्रद्धा के सँग वो क्या पुजा ?
देवता बन हर किसी को छल रहा।

कर रहे नीलाम जो मेरा वतन
दौर ऐसे जाहिलों को फल रहा।

सच मसीहा की तरह सूली चढ़ा
सिलसिला यह मुद्दतों से चल रहा।

❋❋

Scanned by CamScanner

इकत्तीस

इस दौर में सबको पड़े जब जान के लाले
ढहती हुई दीवार भला कौन सँभाले ?

हमदर्द कहीं कोई दिखाई नहीं पड़ता
जो इस अशक्त देश को काँधों पे उठाले।

रक्त-पिपासू जहाँ रहते सदा काँटे
उस राह के आदी हुए हैं पाँव के छाले।

अब हो गये हैं आग से जब फूँस को खतरे
बादल है अगर तू तो, इस बस्ती को बचाले।

हद जुल्म को सहने की भी होती है सितमगर
डर है कहीं 'बेजार' भी खंजर न उठा ले।

**

Scanned by CamScanner

बत्तीस

जो बन जनसेवक अब आये
उनसे भइया राम बचाये।

आदर्शों की, नैतिकता की
सब बैठे दूकान लगाये।

कहाँ भूख मिटती रोटी से ?
हर कोई अब चन्दा खाये।

नाली में वो धुत्त पड़ा है
जो गान्धी जी की जय गाये।

अपने ही जब रक्तपिपासू
अब 'बेजार' कहाँ बच पाये ?

**

तेवरीपक्ष – 11

Scanned by CamScanner

वर्तमान स्थितियों में गोपियों का श्री कृष्ण को संदेश

"रपट लिखाते हम डरें, ऊधौ कहियो जाय,
थाने जाते हम डरें, ऊधौ कहियो जाय,।
रास रचाया श्याम ने, जमुना के वे तीर,
वहाँ नहाते हम डरें, ऊधौ कहियो जाय।,,

शतकों की परम्परा में (शीघ्र प्रकाश्य) अद्वितीय तेवरी-शतक

प्रेम न जाने श्याम

मूल्य—बीस रुपये,

कवि—रमेशराज

विचारों के आधार पर रस-निष्पत्ति सम्बन्धी एक नितांत मौलिक कृति—

कविता क्या है ?

(शीघ्र प्रकाश्य)

ल —रमेशराज

मूल्य—साठ रुपया

सार्थक-सृजन प्रकाशन, ईसा नगर, अलीगढ़

Scanned by CamScanner

तेवरी विधा के पाँच महत्वपूर्ण संग्रह

(१) अभी जुबाँ कटी नहीं	सम्पादक—रमेशराज,	मू०—पाँच रु०
(२) कबीर जिन्दा है	सम्पादक—रमेशराज,	मू०—दस रु०
(३) इतिहास घायल है	सम्पादक—रमेशराज,	मू०—पाँच रु०
(४) एक प्रहार : लगातार	कवि—दर्शन बेजार,	मू०—पाँच रु०
(५) देश खण्डित हो न जाए	कवि—दर्शन बेजार,	मू०—दस रु०

समकालीन विसंगतियों, विकृतियों का ऐतिहासिक दस्तावेज—

(शीघ्र प्रकाश्य कविता संग्रह)

दीदी तुम नदी हो

कवि—रमेशराज,

प्राप्ति स्थल—सार्थक सृजन प्रकाशन, ईसा नगर, अल

बुक-पोस्ट/मुद्रित सामग्री

सेवा में,

श्री श्याम सुन्दर सेठ

H-23 राम नगर कॉ

भोपाल

संम्पादक/मुद्रक/प्रकाशक : रमेशराज द्वारा सार्थक सृजन प्रकाशन, ईसानगर अलीगढ़ के लिये शारदा प्रिंटर्स, 'राठी भवन' सासनी गेट, अलीगढ़ से मुद्रित।